लल्लेश्वरी - योगेश्वरी

डा. भानुशंकर मेहता *

हिन्दी हमारी राष्ट्रीय भाषा है। पहले भले ही उत्तर भारत की आम या प्रादेशिक भाषा थी पर अब जब वह राष्ट्रभाषा पद पर आसीन है तो उसका दायित्व कई गुना बढ़ गया है। भाषा के प्रश्न पर दक्षिण भारत के कई बंधुओं से मेरा पत्र-व्यवहार हुआ। एक मित्र ने लिखा 'हम तो मीरा और तुलसी को जानते हैं पर क्या आपने आंदल और कम्ब रामायण का नाम सुना है?' बात मर्मस्पर्शी है। हिन्दी अब केवल उत्तर प्रदेश की बोली नहीं है कि संकुचित क्षेत्र में विकसित हो। राष्ट्रभाषा की पाठ्यपुस्तकें तो ऐसी हों कि उनमें समूचे भारत का, सभी प्रदेशों की संस्कृतियों का, भाषाओं का, दर्शनीय स्थलों का, संत महात्माओं का, विद्वानों और साहित्य आदि का परिचय हो। इन पाठ्य-पुस्तकों के लेखक भी हिन्दी जानने वाले उन्हीं प्रदेशों के लेखक हों जिससे उनके आलेख में उस प्रदेश की भाषा का छौंक भी मिल जाय और प्रादेशिक शब्दों से राष्ट्रभाषा समृद्ध हो। *भाषाई प्रदेश* तो बने पर *भाषाई परिवार* नहीं बना। दक्षिण भारत वर्षों तक 'मद्रास' और वहाँ का हर व्यक्ति 'मद्रासी' कहलाता रहा। आज भी बहुत लोग अनभिज्ञ हैं कि दक्षिण भारत में 4 समृद्ध संस्कृतियाँ हैं। पर यह बात केवल दक्षिण भारत पर ही नहीं वरन् समूचे देश पर लागू है। असम, बंगाल, उड़ीसा, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, हरियाणा और कश्मीर का भी अपना वजूद है जिसका समावेश राष्ट्रभाषा में होना चाहिए।

आज 'कश्मीर' बहुचर्चित राज्य है। साधारण आदमी कश्मीर के इतिहास और साहित्य एवं दर्शन से बहुत कम परिचित है। कश्मीर का शैवदर्शन (प्रत्यभिज्ञादर्शन), कश्मीर के सूफी संत, कश्मीरी पंडित, कश्मीर का संगीत और कलाकारी से कम लोग परिचित हैं। हम तो बस इतना जानते हैं कि उत्तर में कश्मीर राज्य है जहाँ वैष्णो देवी हैं, डलझील है, अमरनाथ हैं, स्वर्ग सी सुन्दर वादियाँ हैं और बड़े सुन्दर नर-नारी रहते हैं। यह भी लोग जानते हैं कि सीमा पार से यहाँ आतंकवाद का बोलबाला है। कश्मीर की सुषमा और वैभव के अन्य उपादानों से कम ही लोगों का परिचय है।

कश्मीरी शैवदर्शन पढ़ते हुए मेरे सामने एक संत कवियित्री "लल्लादे" का नाम आया। हिन्दी साहित्य में तो इनकी चर्चा क्या होती, अन्यत्र भी अल्प परिचय ही मिला। कश्मीर के हर घर में, हिन्दू हों या मुसलमान सभी उसे याद करते हैं, उससे प्रेम करते हैं। जैसे हमारे यहाँ कबीर की बानी हर किसी के मुख पर है वैसे ही "लल्ला वाक्यानी" हर कश्मीरी की विरासत है। लोग आज भी उसके रचे गीत गाते हैं। मुसलमान उसे *शाह हमदानी (सूफी संत) की चेली* बताते हैं और कहते हैं उसने इस्लाम कबूल कर लिया था और उसका नाम है *"लल्ला अरीफा"*। पंडित कहते हैं नहीं वह *शैव योगिनी* थी। उसे अनेक नामों से जाना जाता है-लल्ला, लल्लेश्वरी, लल्ला योगेश्वरी, लाल दीदी, लाल देद। एक बात जो विशेष रूप से ध्यान देने की है कि लल्ला जिस दर्शन की बात करती है, वही तो भक्तियुग के सभी संत करते थे, पर वह कबीर और नानक से पहले हुईं (14वीं शती ई. में)। उत्तर भारत का संत साहित्य उससे कितना प्रभावित हुआ यह हम नहीं जानते, शायद वह कश्मीर तक ही सीमित रहीं। लल्ला की कविताएँ पढ़ें तो आश्चर्यचकित हो जायेंगे कि अरे, यही तो रामानंद, तुलसी, मीरा, सूर, कबीर, नानक कहते थे,

---

* बी. 37/67, बिरदोपुर, वाराणसी - 221 010

यही तो चैतन्य, चण्डीदास, विद्यापति और वल्लभाचार्य कहते थे। यह सही है कि लल्लेश्वरी ने कोई सम्प्रदाय नहीं चलाया, कोई मठ स्थापित नहीं किया पर उसकी वाणी (वाक्यानी) में वेदांत का दर्शन 'तत्त्वमसि' मुखर है, वह शैव दर्शन में रची-पगी है। वह कहती है मानवी आत्मा परमात्मा का ही अंश है। केवल ब्रह्म ही सत्य है, वही ब्रह्म जो सर्वव्यापी है पर ध्यानातीत है। लल्ला के गीत (जो प्राचीन कश्मीरी भाषा- सन् 1200 से 1500 तक की भाषा में हैं जिसे इण्डो ईरानी-दर्दिक और इण्डो आर्यन-संस्कृत का मिश्रण कह सकते हैं) पढ़ें तो उसके दर्शन की बात स्पष्ट हो जायेगी, ज्ञात हो जायेगी कि आज लगभग सात सौ वर्ष के बाद भी वह क्यों इतनी लोकप्रिय हैं।

राष्ट्रभाषा के खातिर आइये उनका जीवनवृत्त देखें और उनकी कविताओं का (मूल कश्मीरी में नहीं- सतही अनुवाद में) अवलोकन करें।

लल्ला का जन्म, उदयन देव के राज्यकाल में (उदयन का निधन सन् 1383 के लगभग हुआ था) सन् 1335 में हुआ था। सैयद अली हमदानी - सूफी संत सन् 1370 से 1386 के बीच कश्मीर में थे और उस समय लल्ला विद्यमान थीं। लल्ला का जन्म श्रीनगर से लगभग 6 किमी. दूर पन्दरेनथान ग्राम में हुआ था। अन्य संतों की भाँति लल्ला का जीवन चरित्र भी चमत्कारी लोककथाओं से आवृत्त है। उनके जीवन के बारे में लोक कथाओं के अलावा जानकारी कम है। पर लोक कथायें अविश्वसनीय कहकर उपेक्षा करने योग्य नहीं हैं। कहते हैं लल्ला को अपने कई पूर्व जन्मों की कथा ज्ञात थी। एक जन्म में वह पन्दरेनाथन गाँव में ब्याही गयी थी। वहाँ उसे एक पुत्र पैदा हुआ। 11वें दिन पूजा कराने गृहपुरोहित आये तो लल्ला ने उनसे पूछा 'पंडित यह मेरा कौन है?' पंडितजी चकित थे, यह कैसा प्रश्न है? उन्होंने कहा, 'क्यों, यह तेरा पुत्र है।' लल्ला ने कहा, 'नहीं यह मेरा पुत्र नहीं है।' पंडित जी ने पूछा 'तब यह तेरा कौन है?' लल्ला बोली, 'आज उसका उत्तर नहीं दूँगी पर अगले किसी जन्म में बताऊँगी, अभी तो तत्काल मैं मर जाऊँगी।' और बताया कि अमुक समय फलां गाँव में मैं एक विशेष लक्षणयुक्त बछिया के रूप में जन्म लूँगी वहाँ जाकर पूछना और लल्ला मर गयी। पंडित जी ने जाकर बछिया की तलाश की। बछिया मिली पर उसने कहा-'अगले जन्म में पूछना अभी तो मर रही हूँ।' उसके बताने के अनुसार पिल्ले से पूछा और उसने अगले जन्म में बताऊँगा कहकर टाल दिया। पंडित जी ने हारकर तलाश बंद कर दी। इस प्रकार छः जन्म लेने के बाद लल्ला पैदा हुई। 12 वर्ष की हुई तो उसका विवाह पूर्वजन्म के उसके पुत्र से जो अब युवक हो गया था, कर दिया गया। यह विवाह उसी पंडित ने कराया और तब लल्ला ने उसे बताया कि देखो जीवन के संसारी संबंधों का कोई महत्त्व नहीं है। यह जीवन क्या है, जैसे गर्म तवे पर गिरी पानी की एक बूँद। जैसे सरोवर पर तृष्णा या प्यास बुझे अनेक पशु एकत्र होते हैं और फिर अपने रास्ते चले जाते हैं उसी प्रकार ये परस्पर संबंध हैं-माता, पिता, पति, पत्नी, पुत्र, भाई आदि। नदी में बहते लट्ठों का परस्पर संबंध क्या है? पंडितजी सांसारिक संबंधों का कोई महत्त्व नहीं है। जीवों की एकात्मता को समझें।

लल्ला के पूर्वजन्म का पति अब उसका ससुर था और लल्ला की मृत्यु के बाद उसने एक कर्कशी से ब्याह कर लिया था जो लल्ला को निरंतर सताती रहती थी। खाना नहीं देती थी। 'ससुर' दुखी पर असहाय था (आज भी कश्मीर में सास बहुओं के संबंध पर लल्ला के किस्से कहे जाते हैं)। शादी तो हो गयी थी पर वे कभी साथ नहीं रहे। लल्ला बारह वर्ष तक एक आदर्श बहू की तरह सौत-सास के अत्याचार सहती रही फिर एक दिन घर त्याग दिया।

उस समय उसकी उम्र 24-25 की रही होगी। वह सीधे पामपुर ग्रामवासी शैव संत-सेडवायु अर्थात् सिद्ध श्रीकण्ठ (जो उसके पारिवारिक पुरोहित थे) के पास गयी और उनकी शिष्या बन गयी। ये श्रीकण्ठ शैव सम्प्रदाय के संस्थापक वसुगुप्त के शिष्य थे। गुरु से दीक्षा पाकर लल्ला शीघ्र शैव दर्शन में निष्णात हो गयी और गुरु से भी आगे बढ़ गयी। कभी-कभी तो बहस में उन्हें हरा भी देती थी, अनुत्तरित कर देती थी। इस प्रकार वह योगिनी बन गयी, साधक उन्हें गार्गी या ब्रह्मवादिनी कहते थे।

अब वह स्वच्छन्द होकर नगर-ग्राम में विचरण करने लगी। उन्हें ध्यानातीत अवस्था में अपने वस्त्र का भी ध्यान नहीं रहता, बहुधा अर्धनग्न अवस्था में घूमती थी। लोग अंगुली उठाते थे, उपहास करते थे पर वह इस ओर ध्यान ही नहीं देती थी। वह समाज की वेशभूषा की मर्यादा मानती ही नहीं थी। एक बार एक व्यापारी ने उन्हें समझाया तो उन्होंने एक वस्त्र माँगा। वस्त्र के दो टुकड़े किये, उन्हें तौला। फिर एक टुकड़ा दोनों कंधों पर रखकर घूमती रही। लोग जी भर कर उपहास कर चुके तो टुकड़े कंधे से उतारे, तौला। दोनों तौल में बराबर थे। तब व्यापारी से कहा 'देखो', इन वस्त्रों पर निन्दा स्तुति का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

फिर तो वह चतुर्दिक गाती-नाचती भ्रमण करती रही। उनके अन्दर दिव्य आनंद का स्रोत बहता रहता था। कहते हैं कि काफी उम्र पाकर श्रीनगरसे दक्षिणपूर्व में करीब 40 किमी दूर स्थित बृजविहार नामक स्थान में जामा मस्जिद के सामने उन्होंने देह त्याग दिया। प्रत्यक्षदर्शियों का बयान है कि मृत्यु प्राप्त होने पर उनके शरीर से एक दिव्य ज्योति निकली जो कुछ देर हवा में झूमती रही और फिर आकाश में विलीन हो गयी।

लल्ला ने स्वयं कोई ग्रंथ नहीं लिखा। मस्ती में गाती थीं और लोग वे गीत लिख लेते थे (कबीर की तरह)। विद्वान जी.ए.ग्रियर्सन ने उनके 110 गीतों का अंग्रेजी अनुवाद किया था। उसके अन्य कई गीत लोगों के संग्रह में हैं। इन गीतों की भाषा प्राचीन कश्मीरी है। इस भाषा में तेरहवीं शती से पूर्व विद्यमान श्रीकण्ठ आचार्य ने शैवतंत्र का ग्रंथ *'महानयाप्रकाश'* लिखा जो बंगाल के चर्यापद जैसा है। लल्ला के गीत आगे आने वाले भक्ति गीतों के पूर्वरूप हैं। इन गीतों को आप समय और देश की सीमा में बाँध नहीं सकते। इनमें एक महान संत नारी के हृदय की आवाज है जो वैखरी से ऊपर मध्यमा या परापश्यन्ति के वाक् का स्पर्श करती है।

जैसा पहले कहा जा चुका है-राष्ट्रभाषा ने तो लल्ला के काव्य की उपेक्षा ही की है पर कुछ ग्रन्थ उपलब्ध हैं-

(1) रॉयल एशियाटिक सोसायटी का मोनोग्राफ (संख्या 17)- *'लल्ला वाक्यानी ऑर वाइज़ सेईंग्स आफ लाल देद।'* इसका संपादन *जार्ज ग्रियर्सन* और डा. लायोनल बेनेट ने किया है।

(2) *वर्ड्स ऑफ लल्ला - 'द प्रोफेटेस्स'* - ले. सर रिचर्ड कारनाक टेम्पल।

(3) पंडित आनंद कौल - *लल्ला योगेश्वरी वासी, हर लाइफ एण्ड सेईंग्स।* इस ग्रन्थ में अनेक लोककथाएँ और वाक्यानि संगृहीत हैं।

(4) *वुमेन सेण्ट्स आफ ईस्ट एण्ड वेस्ट* - रामकृष्ण वेदांत सेण्टर, लंदन द्वारा सन् 1955 में प्रकाशित ग्रंथ जिसका आमुख श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने और भूमिका केनेथ वाकर ने लिखी है। इस ग्रंथ में श्रीमती चन्द्र कुमारी होडू, एम.ए. का लेख है-'ल्लेश्वरी और लाल दीदी ऑफ कश्मीर'।

(5) *कश्मीर ने शैव परम्परा* (गुजराती)- लेखक श्री सुधीर देसाई, भारतीय स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयन्ती

पर संस्कृत साहित्य अकादमी, गांधी नगर द्वारा प्रकाशित संस्कृत साहित्य श्रेणी में–लल्लेश्वरी के 14 गीतों का गुजराती अनुवाद।

(6) *द कल्चरल हेरिटेज ऑफ इण्डिया,* भाग 5 (श्री रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, कलकत्ता) में डा. सुनीति कुमार चटर्जी का कश्मीरी साहित्य पर लेख।

इस जीवन चरित्र दर्शन के बाद आइये देखें लल्लेश्वरी के कुछ गीत–

(1) आध्यात्मिक अनुभव

वासना - आँखों में भरी चाह
चतुर्दिक ढूँढती, खोजती दिन रात
देखो! मैंने देखा उस सत्यवादिन को, ज्ञानी को
यहाँ अपने ही घर में, मेरे दृष्टि आकाश को भरता।
(मोहें कहाँ ढूँढे रे बन्दे, मैं तो तेरे पास में– कबीर)

(2) विशुद्ध चैतन्य में विलय

वहाँ शिव का भी चरम प्राधान्य नहीं है
न उसकी परिणीता शक्ति का ही शासन है,
है, मात्र 'कुछ' है, स्वप्न जैसा
जो चलता है अपनी छलनामयी चाल से।

(3) नग्नता

तब नाच री लल्ला, पवन के वस्त्र पहन कर
तब गीत गा री लल्ला गगन वस्त्र धारण कर
अरी पवन और गगन से अच्छे कौन वस्त्र हो सकते हैं?
वस्त्रों से तन ढगने का रिवाज है, पर क्या वे पावन करते हैं?

(4) ऋण लेना और कर्ज देना

केवल वही सुखी है, वही शांत है
त्याग कर जो झूठी आशाएँ, उठा है
जहाँ कामनाओं के कठोर कर्ज थम गये हैं
जहाँ न कोई उधार खाता है, न कोई ऋण दाता।

(5) सिद्धों से

क्यों ज्वाला को बुझाते हो क्यों रोकते हो धारा।
क्यों आकाश की ओर पैर करके चलते हो
क्यों दुहते हो बैल को, क्यों देखते हो जादुई सपने
अरे ये तो जादूगर के ओछे करतब हैं।

(6) सर्वव्यापी ब्रह्म

तूं ही आकाश है, तूं ही धरती है
केवल तूं ही दिन है, तूं ही रात है
तूं स्वयं ही वह सब कुछ है जो बना है
तेरे चरणों में निवेदित सुंदर पुष्प भी तूं ही तो है

(7) द्वार

बड़ी कोशिश की, मेहनत की पर द्वार बंद था
सांकल चढ़ी थी, अर्गला लगी थी
तब वह और चाहने लगी–उसे देखने को
वह जो दृष्टि से परे था–
तब भी वह द्वार से लगी घूरती खड़ी रही।
आत्मा की समूची शक्ति से उसका चिंतन करती रही
और यह देखो! खोल दिया उसने द्वार सदा सर्वदा के लिये।
वहाँ अंदर झाँककर देखा – उस समग्र को
और लल्ला ने आत्मा से लिपटी सारी गंदगी जला डाली।

(8) तत्त्वमसि

मेरा 'मैं!' अरे तूं भी तो मैं है,
मेरा 'मैं!' अरे मैं तो तूं है।
जब हम दोनों एक होंगे तो फिर कभी न मरेंगे
पर इसका तात्पर्य ही क्या है–क्यों और कैसे?

(9) पदार्थ

केवल एक पल को फूल खिलता
हरे भरे वृक्ष पर शोभा धाम, चमकीला
केवल एक पल को शीतल पवन का झोंका आता,
झाड़ी के नंगे कांटों से गुजरता मुक्त होकर।

(10) मा फलेषु कदाचन

तो भी अगर मैं श्रम करूँ अपने को भूलकर
मैं अर्पित करूं अपने सभी कर्म आत्मन को,
निज स्वार्थ से ऊपर उठकर आस्था से कर्म करूँ
मेरे लिये यह आगे का मार्ग होगा।

(11) श्रम ही पूजा है

मैंने जो भी जैसा भी श्रम से कर्म किया
मैंने जो भी जैसा भी विचार व्यक्त किया
वह मेरे अन्दर अव्यक्त पूजा थी
वह मेरे मन में छिपी पूजा थी।

(12) मुक्ति की पुकार

मेरे पीठ पर लदा चीनी का बोरा उतारो
रस्सी और गाँठों से मेरे कंधे छिलते हैं,
मेरे तन का श्रम वक्र और शिथिल हो गया है
अब और कितना ढो सकूँगी, गिर पड़ूँगी

गुरु ढूँढने निकली तो उसे कहते सुना,
वह सत्य जिनसे मेरे हृदय को आहत करते फफोले फूट गये
छलना भरी माया से छूटने की यह पीड़ा
कब तक ढो सकूँगी, गिर पड़ूँगी।

मेरी चेतना के रेवड़ भटक गये हैं
चरवाहे की पुकार से आगे कहीं दूर चले गये हैं,
अभी तो मुक्ति के पर्वत पार करने हैं
तब तक कैसे ढो सकूँगी - गिर पड़ूँगी।

(13) अपने अंतर्जगत में ढूँढती - तलाश करती
मैं आ पहुँची हूँ नूर भरे - ज्ञान चंद्र क्षेत्र में
ढूँढते-ढूँढते मैंने अब जाना है उस पूर्ण को
जाना है यह सत्य कि जैसा तैसे में मिल जायगा।

(14) ओ नारायण, सब कुछ तो तूं है
केवल तूं ही नारायण, मैं सब देखती
अरे नारायण, तूं सबको अपनी लीला दीखाता है
पर मेरे लिये तो यह सब तेरी माया है

(15) जाना है मैंने - मैं परम आत्मा हूँ
जाना मैंने ओ नारायण, तूं क्यों बिछुड़ जाता है
मैंने स्वप्न की मरीचिका हल कर ली है
देखा है जहाँ हम दोनों एक हो विहरते हैं

(16) मैंने देखा एक मूर्ख, मारता था अपने रसोइयें को
बस तभी से मैं लल्ला, उसकी राह देखती हूँ
ये बंधन कब टूटेंगे?

(18) हजार अपशब्द फेंके उनने मुझ पर
पर मैंने लिये नहीं उन्हें हृदय में
(चलित नहीं हुए मेरे हृदय में बैठे प्रभु)
यदि मैं शंकर की सच्ची भगतिन होऊँ
तो कैसे मलिन होऊँगी - राख और धूलि से
कैसे धूमिल होगी हृदय की आरसी।

(19) कोई लाभ नहीं कवच (आवरण) को पानी के बदले दूध पिलाने से
रेतीली भूमि में नहीं बोने चाहिये बीज
डांग के छिलकों से बने आटे के पराठे बनाने में
तेल का उपयोग नहीं करना चाहिये
केवल बिगाड़ना होगा - विफलता ही मिलेगी
हिलने डुलने में असमर्थ शक्तिहीन जड़ को
ज्ञान देने का प्रयत्न समय की बरबादी है
गधे को गुड़ खिलाओ या खांड, क्या फर्क पड़ता है!
बुद्धि का दुरुपयोग करके या चर्चा करके
अपने को हैरान करना

(20) अच्छा या बुरा, मुझे तो निभाना है उसके साथ
बाहर से आवाजों के लिये बधिर
बाहर दिखते दृश्यों के लिये अंधे
जब पवित्र नाद मेरी आत्मा को जगायेगा
झिलमिला उठेगी मोमबत्ती की लौ, तूफान में भी।

(21) गुरु ने दिया मुझे, एक ही शब्द
तेरे में उत्तर तूं, इस बाहर की दुनिया में से,
गुरु की आशा ऐसी, प्रभु की वाणी जैसी
इसी से नाच उठी नग्न होकर।

(22) चित्त का अश्व रुकता है गगन में
क्षणभर में कर आता हजारों मील की चकफेरी

जिसे पता नहीं कि उसकी लगाम से कैसे उसे काबू करना
वह प्रान और अपना द्वारा पटक दिया जाता है मृत्यु में
सच्चे योगासन पर बैठकर, अपने श्वासों को काबू में लेकर
अपनी बुद्धि ही पकड़ती है चित्त की लगाम।

(23) अपने शरीर के खिड़की दरवाजे सख्ती से बंदकर
मैंने पकड़ लिया है चोर को, प्राण को
बंद कर दिया है अंदर
अपने हृदय की कोठरी में हाथपाँव बाँधकर
ॐ के मर्मवचनों से झोर दिया है उसे।

(24) जब सूर्य पिघल जाय, तब चन्द्र प्रगट होता
जब चन्द्र अस्त होता, जागृति बढ़ती
जब जागृति डूब जाती, तब कुछ नहीं रहता
तीनों पवित्र व्याहृतियाँ भी अलोप हो जाती–अंत में।

(25) जब तंत्र पिघल जाते, मंत्र शेष रहते
जब मंत्र लुप्त हो जाते चित्त को छोड़कर
जब चित्त विलीन हो जाता, शून्य बचता
शून्य फिर ग्रहण करता शून्य को

(26) मूर्ति तो केवल पत्थर है
और मंदिर भी ऐसा ही है
एक ही तत्त्व से जुड़े हैं ऊपर नीचे
अज्ञानी ब्राह्मण, तूं किसे अर्पित करता अपनी प्रार्थना?
कैवल्य प्राण और चित्त के बीच महत्त्वपूर्ण संबंध हैं।

(27) संन्यासी यात्रा पर जाता है सभी पवित्र स्थलों की
अपने प्रभु की शोध में है वह
ए मन, खोना मत शिक्षा मिलने के बाद
धारा हमेशा दूर से हरी दिखती है।

(28) मन को संतोष नहीं होता
भले वह सिंहासन पर बैठकर राज करे
सत्ता और स्थान त्यागने पर भी संतोष नहीं होता

लोभ बिना मरता नहीं आदमी
जीते जी मरने में ही है सच्चा ज्ञान।

(29) शास्त्रों के पक्ष या विपक्ष में बोलना आसान है
पर बड़ा कठिन है उनके अनुसार चलना
कठिन है, रहस्यभरी है सत्य की शोध यात्रा
और तो भी मैंने प्राप्त की है
आनंदमय जागृति की अवस्था।

कपास और लल्ला (लंबी कविता के अंश)

पहले मैं, लल्ला जीवन पथ पर कपास का फूल बनी, धुनियों ने मुझे धुन डाला। एक औरत ने कात कर तांत बनाया, तब मैं करघे पर चढ़ी, बुनकर की कितनी ठोकरें सही तब वस्त्र बनी। पत्थर पर पटक-पटक कर धोयी गयी - उजली धवल श्वेत बनी। तब कैंची लिये दरजी आया, काटा, छांटा, खण्ड-खण्ड किये फिर जोड़ा, सिला तब मैं पहनावा बनी। आत्मा मुक्त हुई, मैंने आत्मतत्त्व पहिचाना और मुझे मोक्ष मिल गया। पृथ्वी पर आत्मा की यात्रा दुरूह है, मंजिल तक मुश्किल से पहुँचा जाता है। प्रत्येक जन्म में जीवन पथ कठिन रहा है, इसके पहले कि तूं मित्र का हाथ पकड़ सके।

लल्ला को उनके भक्त **सर आर.सी.टेम्पुल** की वंदना-

लल्ला तू केवल एक भक्त है।
अपने युग और कुल की बेटी है।
तेरे गीत मुझे तेरा दास बना देते हैं।
मैं- एक विजातीय परदेसी का बेटा।

•